ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

मधु कांकरिया की भाषा में यथार्थपरकता

डॉ. प्रियंका कुमारी

विभागाध्यक्ष, हिन्दी–विभाग

महात्मा गाँधी, महाविद्यालय, सुन्दरपुर, दरभंगा

सारांश :–

समकालीन लेखिका मधु कांकरिया ने भाषा और शैली के स्तर पर अपनी सजगता दिखाकर अपने उपन्यासों को रचनात्मक उत्कर्ष पर ले जाने की सफल कोशिश की है। लेखिका ने अपनी रचनाओं के कथ्य के अनुसार भाषा का चयन किया है। उनके लगभग सभी रचनाओं की भाषा देशकाल, वातावरण तथा पात्रों के सर्वथा अनुकूल है। उनके उपन्यासों में बंगाल की ठेठ आदिवासी बोली है, तो कहीं शहरी भाषा की योजना है, तो कहीं अंग्रेजी की छटा है। यह वर्तमान समय की मांग है। मांग के अनुसार लेखिका ने कम्प्यूटरी भाषा का भी प्रयोग किया है। उनके रचनाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनमें भूमंडलीकरण और बाजारवाद से प्रभावित हिन्दी का प्रयोग किया गया है। आवश्यकतानुसार पंजाबी, बिहारी, मारवाड़ी, आदि के शब्द का प्रयोग मिलता है, तथापि लेखिका ने कहीं भी भाषा की सरलता, सहजता और बोधगम्यता से समझौता नहीं किया है। मधु कांकरिया हिन्दी साहित्य की एक ऐसी सशक्त लेखिका है, जिनकी भाषा में यथार्थ बहुत ही निर्भीक और संवेदनशीलता के साथ प्रकट होता है।

मुख्य शब्द– यथार्थपरकता, भाषा-शैली, प्रतीकात्मकता, समकालीन उपन्यास, भाषागत वैशिष्ट्य, कथ्य और शिल्प, बोधगम्यता, भूमंडलीकरण, बाजारवाद।

प्रस्तावना :–

अपने भावों, विचारों, अनुभूतियों की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति सभी चाहते हैं। मनुष्य जब संसार या सृष्टि के सानिध्य में आता है, उसे देखता है अथवा महसूस करता है, तो भीतर ही भीतर अनेक तरह की अनुभूतियाँ सहज ही मन में उत्पन्न होती है, उन अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की इच्छा होती है। अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा को साधन के रूप में अपनाना पड़ता है। प्रत्येक मनुष्य अपनी भावनाओं, विचारों या अनुभूतियों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही करता है, तथापि यही कार्य जब एक साहित्यकार करता है तो अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में उनकी भाषा सामान्यजनों से पृथक् और विशिष्ट हो जाती है। साहित्यकारों की भाषा में भावबोध, सौन्दर्भ बोध, कल्पनाशीलता, वैचारिकता और कलात्मकता की अपनी विशिष्ट भूमिका

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

होती है। यही कारण है कि भाषा सुंदर, बोधगम्य और प्रभावोत्पादक बन जाती है। भावनाओं की अभिव्यक्ति के प्रकार, शब्द-योजना, वाक्य-योजना, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, सूक्तियों एवं दृष्टांतों का प्रयोग विभिन्न शैलियों का प्रयोग नाटकीयता, सांकेतिकता एवं संवाद-योजना मिलकर भाषागत शिल्प का निर्माण करते हैं। इसी के आधार पर प्रत्येक रचनाकार की पहचान अलग-अलग बनती है।

समकालीन उपन्यास लेखिका मधु काँकरिया ने भाषा और शैली के स्तर पर अपनी सजगता दिखाकर अपने उपन्यासों को रचनात्मक उत्कर्ष पर ले जाने की सफल कोशिश की है। लेखिका के अपने उपन्यासों के कथ्य के अनुसार भाषा और शैली का चयन किया है। उनके लगभग सभी उपन्यासों की भाषा देशकाल वातावरण तथा पात्रों के सर्वथा अनुकूल है। उनके उपन्यासों में, बंगाल की ठेठ आदिवासी बोली है, तो कहीं शहरी भाषा की योजना है, तो कहीं अंग्रेजी की छटा है। यह वर्तमान समय की मांग है। मांग के अनुसार ही उपन्यास लेखिका ने कंप्यूटरी भाषा का भी प्रयोग किया है। उनके उपन्यासों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनमें भूमंडलीकरण और बाजारवाद से प्रभावित हिन्दी का प्रयोग किया गया है। आवश्यकतानुसार पंजाबी, बिहारी, मारवाड़ी, आदि के शब्द का प्रयोग मिलता है, तथापि लेखिका ने कहीं भी भाषा की सरलता, सहजता, तथा बोधगम्यता से समझौता नहीं किया है।

अनेक प्रकार के कलात्मक भाषा और शैली का प्रयोग कर लेखिका ने अपने उपन्यासों को संप्रेषणीय एवं प्रभावोत्पादक बना दिया है। प्रतीक, बिंब और मिथक आदि समकालीन उपन्यासकारों के सहायक उपकरण माने जाते हैं। चूँकि प्रतीक, मिथक, बिंब, रूपक लाक्षणिक या संगीतात्मक ध्वनियों के सहयोग से वह प्रभाव को चेतना के विभिन्न स्तरों पर संप्रेषित और संस्पर्शित करने की कोशिश करता है। इसकी आवश्यकता इसलिए भी है, क्योंकि आज का व्यक्ति-मन उतना सीधा या सपाट नहीं रह गया है। नए मूल्यों ने पुरातन मूल्यों पर अतिक्रमण कर लिया है। इस तरह की मूल्यगत जटिलता को अभिव्यक्त करने के लिए उक्त उपादानों का प्रयोग अपरिहार्य हो गया है।

मधु काँकरिया ने अपने उपन्यासों में कथ्य और शिल्प दोनों को महत्त्व दिया है। भाषा और शैली के प्रति उनकी जागरूकता सर्वत्र देखी जा सकती है। अपने उपन्यासों के कथ्य के अनुरूप ही भाषा और शैली का चयन करके उन्होंने अभिव्यक्ति को शानदार बना दिया है। समकालीन रचनाकारों ने रचनात्मक शिल्प पर अधिक ध्यान दिया है। मधु काँकरिया को इस सीमा से बाहर नहीं रखा जा सकता है। शिल्प के संदर्भ में ख्यात आलोचक डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव का कहना है कि “समस्त

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

औपन्यासिक सामग्री को प्रस्तुत करने की किसी निश्चित वर्णन-पद्धति को उस रचना की शिल्प-विधि कहते हैं।"[1]

मधु काँकरिया के उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा और शैली को निम्नलिखित बिन्दुओं में प्रस्तुत किया जा सकता है-

क) भाषागत वैशिष्ट्यः

भाषा ही भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का साधन है। साहित्यिकार हो, विचारक हो, नेता-हो वक्ता हो या आम आदमी। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति की भाषा दूसरे व्यक्ति से अलग होती है। यद्यपि भाषा की उत्पत्ति समाज और परंपरा से होती है, तथापि उसपर वैयक्तिक छाप अनविर्यात: होती है। शब्द चयन, उच्चारण, लय, आरोह-अवरोह के कारण एक आदमी की भाषा दूसरे की भाषा से पृथक हो जाती है। इसी कारण प्रत्येक साहित्यकार की अपनी भाषागत विशेषता होती है। यही वह आधार है जिससे हम किसी के रचनात्मकता को अलग रूप में पहचान पाते हैं।

मधु काँकरिया अपने परिवेश तथा रचनात्मक कथ्य के प्रति जितनी जागरूक है, उतनी ही, अपनी भाषा के प्रति भी। वह अपने उपन्यासों में सर्वथा कथा तथा पात्र के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है। उनकी भाषा अत्यंत जीवंत है, चूँकि यह भाषा घटना, परिवेरश, तथा पात्र की स्थिति परिस्थिति के साथ ही उनके मनोदशा को भी रेखांकित करने में समर्थ हैं। मधु जी की भाषागत विशिष्टता को निम्निलखित बिन्दुओं में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है-

प्रतीकात्मकता :–

प्रतीकात्मकता भाषा का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण है, चूँकि भाषा का प्रत्येक शब्द किसी न किसी व्यकित, वसतु या भाव को रेखांकित करता है। वैसे भी साहितय में 'प्रतीयमान अर्थ' की अभिव्यक्ति ही रचनाकार का सबसे महत्तवपूर्ण उद्देश्य होता है। इस अर्थ की व्यंजना के लिए अभिधा तथा लक्षणा के बजाय व्यंजना शब्द शक्ति का प्रयोग अपेक्षित होता है, ताकि अंतनिहित मंतव्य को पाठक बनाम सामाजिक तक पहुँचाया जाय। सपाटबयानी से साहित्यिक सौन्दर्य का निमार्ण नहीं किया जा सकता, इसलिए साहित्यकार प्रतीकात्मक शब्दों या भाषाओं का चयन करता है। यह सर्वविदित है कि उपन्यासकार अनेक रूपों में प्रतीक का प्रयोग कतर है। यथा उपनयास के शीर्षक, चरित्र, कथावस्तु आदि में इसका प्रयोग किया जाता है। खासकर प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति वहाँ अपेक्षित होती है, जहाँ प्रत्यक्ष वर्णन संभव नहीं हो पाता है।

समकालीन उपन्यासकार मधु काँकरिया ने अपने लगभग सभी उपन्यासों में उपरोक्त भाषा-शैली का प्रयोग किया है। इस शैली के माध्यम से भावाभिव्यिक्त सहज हो जाती है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

'खुले गगन के लाल सितारे' शीर्षक में 'लाल सितारे उन क्रांतिकारियों का प्रतीक है, जो नक्सलवादी आंदोलन में मारे जा चुके हैं। और वे क्रांतिकारी जो जीवन के अंतिम समय तक अन्याय के खिलाफ लड़ने को तैयार हैं। ये क्रांतिकारी वे लाल सितारे है जो कॉमरेडी जीवन का अपनाते हुए समाज के आखिरी पंक्ति के लोगों के अधिकार के लिए असह्य यातनाओं के शिकार हो रहे हैं। बावजूद इसके उसका हौसला बुलंद है। लेखिका लिखती है कि "आंदोलन की रीढ़ की हड्डी टूट चुकी थी। अधिकांश लाल सितारे टूट चुके थे और जो बचे रह भी गये थे, वे सब अलग-थलग अपने-अपने क्षितिजों में थे, जिनमें मध्याह्न के सूर्य की प्रखरता अब नहीं बची थी।"[2]

'सेज पर संस्कृत' उपन्यास का शीर्षक भी प्रतीकात्मक है। एक संस्कृत सभ्य समाज का कड़वा सच जो इस उपन्यास का विषय है। धर्म के नाम पर अपना संपूर्ण जीवन अर्पण कर साध्वियों, मुनियों का जीवन जीनेवाला संस्कृत व्यक्ति भी अंत में सेज पर पाया जाता है। सेज की लालसा में वह बलात्कार जैसा कुकर्म करने पर भी नहीं कतराता। अधूरी काम इच्छाओं के कारण यह संस्कृत व्यक्ति अपनी कामग्नि बुझाने की कोशिश में अपने संस्कार अपनी गरिमा तक भूल जाता है। इन तमाम परिस्थितियों को उजागर करता यह उपन्यास का शीर्षक 'सेज पर संस्कृत' काफी प्रभावित करता है। "बस, आज रातभर के लिए मुझे भी उफनती नदी में डुबकी लगा लेने दो, कल बिजेन्द्र मुनि के पास मैं स्वयं तुम्हें छोड़ आऊँगा............कोई जान तक नहीं पाएगा। जब धर्म के छतनार वृक्ष बिजेन्द्र मुनि भी कामदेव के हाथों घायल होकर अधर्म में डुबकी लगा सकता है। कामनाओं के कबूतरों को दाना चुगा सकता हैं तो मैं क्यों नहीं? थोड़ा पान-पत्ता भी चढ़ा दो देवी।"[3] इस तरह धर्म के नाम पर जीवन जीनेवाले अभय मुनि के वाक्य काम की लालसा से ग्रस्त नजर आते हैं। इतना ही लेखिका ने जैन-धर्म में अंतर्निहित पाखंड को व्यक्त करते हुए कहा है- "क्षमा करें गुरुदेव, पर यह आपकी दुनिया खद्दर के नीचे मुलायम सिल्क पहनने वालों की दुनिया है। अहिंसा प्रधान आपके धर्म में धोखाधड़ी, जालसाजी, चोरबाजी, मिलावट, सूदखोरी-जमाखोरी, टेक्स चोरी, मुनाफाखोरी, स्मगलिंग, बाल-शोषण स्त्री-देह-शोषण, श्रम-शोषण जैसे जघन्य आर्थिक अपराध को पाप समझा ही नहीं जाता है।"[4]

मधु कॉंकरिया रचित तृतीय उपन्यास 'पत्ताखोर' में भी प्रतीकात्मक भाषा शैली प्रयुक्त हैं। इसमें एक ऐसे युवक की कहानी कही गयी है जो अपने मता-पिता तथा परिवार की उपेक्षा का शिकार है। उनके मन में अकेलापन, कुंठा, संगास आदि घर का गया है, जिससे अबरने के लिए वह नशा को आधार बनाता है। जिस नशा को वह आरंभ में मुक्ति का साधन मानता है, आखिरकार वही, उसे प्रसिद्ध पत्ताखोर, बनकर छोड़ता है। 'पत्ताखोर' यानी नशे का सेवन करने वाला, हेरॉईन, ड्रग्स का नशा करने वाला मनुष्य। हेरॉईन की एक ग्राम की मात्रा को एक पत्ता कहा जाता है। क्षणिक

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

आनंद की प्राप्ति के लिए किया गया नशा आदित्य के जीवन को नष्ट कर देता है। उसे पत्ताखोर बनाकर उस नशे का आदि बनता है, जिसके न मिलने पर अवसाद की स्थिति तक आ जाती है।

'सलाम आखिरी' उपन्यास के शीर्षक में प्रतीक के नवीन आयाम दृष्टिगत होते हैं। यह उपन्यास वेश्या-जीवन के त्रासदपूर्ण यथार्थ को सामाने लाता है। उपन्यास में दिखाया गया है कि प्रत्येक वेश्याओं का अंत हमेशा त्रासदपूर्ण, दर्दनाक और घिनौना ही होता है, उन्हें, अंत में अनेक तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ता है। हर एक ग्राहक को सलाम कर खुश करने वाली वेश्या 'सलाम आखिरी' के वक्त बड़ी बेवश होती है। उनका संपूर्ण जीवन इस संसार से बिदा लेती है। ऐसी ही एक वेश्या रेशमी कहती है-"जीवन की अर्थवत्ता और उद्देश्य यदि था तो सिर्फ यही कि घुटन, दुर्गंध और घुँआ उसे जिस समाज ने होश संभालते ही 'एक स्पायरी' डेट' लिख दिया था और अब कर्म और फल के सिद्धांतों पर से एतबार उठ चुका था उसका।"[5]

उपन्यासकार मधु काँकरिया के उपन्यासों में शीर्षक की प्रतीकात्मकता के साथ ही पात्रों या चरित्रों की भाषा में भी प्रतीकात्मकता देखी जा सकती है। मधु जी की भाषा में प्रतीकों की सुंदर योजना दिखाई पड़ती है। अनुभूतियों की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए लेखिका ने प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है।

'सलाम आखिरी' में प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है। उपन्यास के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

- "जीवन की तमाम आधुनिकता के बावजूद सेक्स जीवित तभी रहता है, जब भावनाओं से जुड़ा हो वह, वरन् वह सिर्फ मुर्दा जिस्मों के साथ हमबिस्तर भर होना है।"[6]
- "जैसे ये हाड़-मांस की जीवंत देह न होकर पशु बाजार में रखा कोई गोश्त है।"[7]
- "कालीघाट की प्रेम की इन्हीं गलियों में से एक गली है बड़ी गली, जहाँ न कोयल कूकती है, न फूल महकते हैं, न समीर अठखेलिया करता है।"[8]

लेखिका मधु काँकरिया के दूसरे उपन्यास 'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास में प्रतीकात्मक भाषा के कतिपय उदाहरण दृष्टिव्य हैं-

- "खूब दरिद्र परिवार से आई मात्र पन्द्रह साल की राधाबाई छत्तीस वर्षीय भवानी बाबू के साथ यूँ घुल-मिल गई जैसे दूध-पानी।"[9]
- "कैसे पढ़ी-लिखी बैल, बिन्दी भी कहीं काले रंग की होती है? शगुन ही बिगाड़ दिया।"[10]

तीसरे उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' से भी कुछ उदाहरणों को यहाँ प्रस्तुत किया जा सकता है, जिसमें प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग मिलता है-

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

- "मोक्षकामी, मृत्युपथगामिनी गांजाबाई। गर्म रेत पर पड़ी मछली की तरह प्राणतक पीड़ा से छटपटाती हाथ-पैर पटकती। हाय-तौबा मचाती।"[11]
- "जैसे चित्रकार की सर्वश्रेष्ठ कृति को किसी शैतान ने झूमते बसंत से उदास पतझड़ में बदल डाला हो।"[12]
- "न्याय का सूरज अगर उगाना होगा तो आसमान की ओर छलांग मारने की चोट भी खानी ही पड़ेगी।"[13]

'पत्ताखोर' नामक उपन्यास में मधु काँकरिया ने निम्नरुपेण प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है-

- "मैंने देखा है कई नशेबाजों को शुरू में मोर की भाँति नाचते, फिर नशा नहीं मिलने पर बाघ और अंत मे सुअर की तरह गंदगी पर लोटते हुए।"[14]
- "मेरी माँ और तुम में यही अंतर है, उन्होंने घड़े को पूरी तरह पकाकर संसार-समुद्र में छोड़ा, तमने कच्चेपन में ही उसे छोड़ दिया।"[15]

निष्कर्ष–

इस तरह मधु काँकरिया के उपन्यासों में प्रतीकात्मक भाषा प्रयुक्त हुए हैं। भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति के साथ प्रतीकात्मक प्रयोग बड़ा ही प्रभावोत्पादक प्रतीत होता है।

संदर्भ-सूची–

1) उपन्यास की संरचना- डॉ. गोपाल राय, पृ. 9
2) त्रिज्या-शैलेश मटियानी, पृ. 236
3) सेज पर संस्कृत-मधु काँकरिया, पृ. 112
4) वही, पृ. 180
5) पत्ताखोर- मधु काँकरिया, पृ. 63
6) सलाम आखिरी-मधु काँकरिया, पृ. 136
7) सेज पर संस्कृत-मधु काँकरिया, पृ. 77
8) खुले गगन के लाल सितारे-मधु काँकरिया, पृ. 91
9) सलाम आखिरी-मधु काँकरिया, पृ. 71
10) आज की हिन्दी कहानी-धनंजय वर्मा, पृ. 66
11) मधु काँकरिया का रचना-संसार डॉ. उषा कीर्ति राणावत, पृ. 92

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

12) वही, पृ. 93

13) खुले गगन के लाल सितारे मधु काँकरिया पृ. 178

14) वही, पृ. 148

15) वही, पृ. 116

© Copyright @ Authors